 ISSN 2581 9917

अल्लाह मेरी तौबा

ज्योति
शोधछात्रा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय।

कुछ दिनों पहले फेसबुक पर पढ़ी-लिखी दोस्त ने एक पोस्ट साझा की थी। पोस्ट यह थी कि लड़कियां एक-दूसरे को खुश नहीं देख ही सकतीं। उन्हें आपस में ही जलन होती है। ऐसे ही एक और लड़की ने अनजाने में (शायद) एक पोस्ट शेयर की, कि लड़कियां मर्दों को दिखाने के लिए नहीं सजतीं बल्कि दूसरी लड़कियों को जलाने के लिए सजती, सँवरती हैं। एक अन्य लड़की ने इसी पोस्ट के नीचे बात साफ करते हुए लिखा कि वह अपने पुरुष मित्र को दिखाने के लिए सजती हैं। इस तरह की बातें सोशल मीडिया पर लड़कियों या महिलाओं के सन्दर्भ में ऐसे ही घूमती रहती हैं। कई बातों को लेकर चुटकुले भी गढ़ लिए जाते हैं। इन चुटकुलों में निशाने पर औरतें रहती हैं। उनके दिमाग से लेकर शक्ल, व्यवहार या फिर उनके तौर-तरीकों को विषय बनाया जाता है। परेशान करने वाली बात यह है कि इन चुटकुलों पर औरतें भी लुत्फ उठाती हैं।

आज के दौर में नैन-नक्श मायने रखते हैं, इस बात को टीवी पर आने वाले सौंदर्य प्रसाधन विज्ञापनों ने साबित कर दिया है। बाजार के पास हर अंग को खुबसूरत बनाने का उत्पाद है। सिर से पांव तक की सजावट के बिना बात पूरी नहीं होती। सुन्दर दिखने का जुनून आज के युवाओं में अगर दिख रहा है तो उसके पीछे बाजार की अहम भूमिका है। इसके अलावा फिल्मी जगत् के कलाकारों का असर भी सिर चढ़कर बोलता है। फैशन के बगैर युवा अपनी रोजमर्रा के बारे में सोच भी नहीं सकते। हर हाथ में मोबाइल होने के चलते खरीदने की प्रक्रिया में देरी नहीं होती। इसके अतिरिक्त घर बैठे कई हजार विकल्पों में से अपने मन मुताबिक सामान का उपलब्ध होना भी एक वजह मानी जा सकती है जिसने रहन-सहन को बेतरह बदल कर रख दिया है।

सुन्दर दिखना एक जरूरत के रूप में तब्दील कर दी गई है। एक होड़ होती है। दफ्तरों में पहले डेस्क पर बैठने वाली लड़की के मन के हाल का आंकलन करना बहुत मुश्किल नहीं है जिस पर हर समय मेकअप के साथ रहने का दबाव होता है। इसके अलावा बहुत सी लड़कियों में सुन्दर दिखने की अभिलाषा कब उनके डर या दबाव में तब्दील हो जाती है, उनको पता भी नहीं चलता। सुन्दरता के मापदंड तय कर देने वाला हमारे आसपास कई तरीके से काम करता है। रविवार के अखबार में शादी के इश्तिहार सुन्दरता के मापदंड को चिल्ला-चिल्लाकर पेश करते हैं। जबकि हमने अपने जीवन मूल्य या साहित्य में यह बात अच्छी तरह से जान लिया है कि सुन्दरता महज नैन-नक्श से नहीं जुड़ी होती। इन्सान को इन्सान बने रहने की शर्त ही सुन्दरता हो सकती है। गौर से देखने पर मालूम चलता है कि औरतों से जुड़े कई झूठे और सतही खयाल हमारी आम रोजमर्रा का हिस्सा बना दिए गए हैं। इन खयालों को औरत जात से पूरी तरह चिपका भी दिया गया। औरतों के व्यक्तित्व में समय-समय पर घर-परिवार, स्कूल और समाज आदि ऐसे व्यवहारों के पैटर्न सतह के तौर पर चिपकाते हैं, जिसका उनको भी कई बार खुद ही खयाल नहीं रहता।

औरतों से जुड़ी दोयम दर्जे की यह बहुत बारीक सोच है जो हम सब में है। यह सोच किसी में बहुत ज्यादा है तो किसी में बहुत कम। जब दिमागी कसरत की जाएगी तब बात कुछ हद तक साफ हो सकती है। लेकिन क्या हम कभी दिमाग की कसरत करते हैं? क्या हम अपने-अपने विवेक का इस्तेमाल करते हैं? अगर करते होते तो किसी के भक्त नहीं बनते। किसी भी बात को आँखें बंद करके नहीं मान लेते। किसी के बहकावे में नहीं आते। कोई भी हमारा फायदा उठाने से पहले दस मर्तबा सोचता। किसी भी बात को मान लेने से पहले उस पर सवाल उठाते और अपनी खुद की कसौटी पर कसते। लेकिन दुःख की बात है कि हम ऐसा अमूमन नहीं करते।

एक-दूसरे को देखकर जलने का मसला इतना सामान्य

मान लिया गया है कि यह हमारे आसपास जब-तब नजर आता है। उदाहरण के लिए आस-पड़ोस की महिलाओं में आपस में इस बात पर बहुत चर्चा होती है। यह जलन के बादल फिल्मी सितारों तक के बीच भी छाये रहते हैं। यह राजनेताओं की गलियों में भी पाया जाता है। बात की शुरुआत जलन यानी ईर्ष्या से शुरू करना बेहतर होगा। जलन या ईर्ष्या किसी में भी मौजूद हो सकती है। ऐसा पुरुषों के साथ भी है। केवल औरतों ने इस पर कब्जा नहीं किया। पुरुष भी एक दूसरे को देख कर जलते हैं या होंगे। क्या ऐसा नहीं है? डिस्कवरी चैनल देखिए तो पता चल जाएगा कि जलन का यह तत्व जानवरों तक में पाया जाता है। जितनी मात्रा नर में होती है उतनी ही मादा में भी। फिर भी निचले दर्जे की सोच से भरा घड़ा लड़कियों या औरतों के सिर पर ही क्यों लाद दिया जाता है? यह एक अहम सवाल है जिस पर ध्यान देना जरूरी है। इंसानी नस्ल के चलते हम किसी एक भाव से नहीं बने। जब जैसी परिस्थिति होती है, हम वैसे ही भाव ओढ़ लेते हैं। यह हर किसी के साथ होता है। यह सामान्य बात है। जब हम किसी कार्य में सफल होते हैं तो तुरंत खुशी का इजहार कर बैठते हैं और जैसे ही कोई नामुराद खबर हमारे कानों तक आती है तब हम दुःखी हो जाते हैं। ठीक ऐसा ही अन्य भावों के साथ भी हैं। ईर्ष्या का भाव भी इनमें से एक है।

मानव की उत्पत्ति के साथ ही उसके भाव का जाल भी बना। कालांतर में परिवार और सम्पत्ति के चलते उसके जीवन में बेतहाशा अंतर आये। रिश्ता चाहे स्त्री और पुरुष के बीच हो या आसपास के पर्यावरण से, दोनों के जीवन में बहुत कुछ जुड़ा। यह बदलाव पुरुष और महिलाओं में सामान रूप से देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए शहरी घरों में बाहर की बनावट या रंग पर पुरुषों की छाया का आभास होता है। बाहरी तौर पर घर घिरे हुए, मजबूत दीवारों वाले और उन रंगों से पुते होते हैं जो किसी तरह की शक्ति के प्रतीक होते हैं या हो सकते हैं। लेकिन घर के अन्दर का हिस्सा नितांत औरतानापन लिए होता है। कुर्सी, मेज, सोफा, घर की दीवारों का रंग या उन पर टंगी तस्वीरें, यह सब एक महक से गीले होते हैं जो औरतों से होकर गुजरती हैं। इतना ही नहीं सभ्यता ने जहाँ उसे एक नई बनावट दी है तो संस्कृति ने उसे एक अलग ही तरह का पर्यावरण दिया। आज जिस दौर में हम जी रहे हैं वहाँ तकनीक का एक बहुत बड़ा हिस्सा हमारी जीवन शैली पर असर डाल रहा है। फिर भी सहेजकर या सुरक्षित रखने का भाव दोनों में ही मौजूद है, इस भागते हुए जमाने में भी। पुरुष बाहरी तौर पर घर की सुरक्षा को सहेजता है तो स्त्री घर के भीतर हर सामान को सहेजकर एक तरह से उसकी सुरक्षा करती है। इसलिए एहसासों के धरातल पर स्त्री और पुरुष एक सामान ही होते हैं। जैसे किसी को पसंद करना, हँसना, रोना, दुःख में रहना या फिर ईर्ष्या में रहना। इस आधार पर यह मानकर चलना कि औरतें ही एक-दूसरे को देखकर जलती है, कहना गलत होगा।

मर्दों या औरतों में इस तरह के तमाम भावों के बीज हमें परिवार और आसपास के माहौल में मिल सकते हैं। लड़कियों और लड़कों को परिवारों की तरफ से समाज में जाने की, दी जाने वाली तैयारी के पीछे इसका बीज छिपा है। परिवारों में परवरिश की एक अहम भूमिका है। यहाँ एक बात पर ध्यान देना भी आवश्यक है कि लड़कों को लड़कियों से अलग परवरिश दी जाती है। इस परवरिश के अंतराल में पुरुष बच्चों के मन में औरतों से जुड़े मजाक या फब्तियों की एक लंबी श्रृंखला आश्चर्यजनक तरीके से विकसित हो चुकी होती है। यकीन न आए तब किसी भी भारतीय मोहल्ले में घुसकर इसका नमूना देखा जा सकता है। हम इन बारीक वजहों पर कभी भी ध्यान नहीं देते। बहुत से परिवारों में यदि पुत्र और पुत्री संतान के रूप में हों तब सामान्य से लेकर कीमती चीज के बंटवारे में पुत्र को पहले क्रम पर रखा जाता है। पुत्री की बारी पुत्र के बाद आती है और कई बार आती भी नहीं। यह सामान्य व्यवहार की श्रेणी में माना जाता है। लेकिन यह सामान्य न होकर एक असरदार व्यवहार होता है जो लड़की को बिना वजह दोयम दर्जे की सीख दे जाता है। उसे असुरक्षित या फिर कमतर महसूस करवाता है। ऐसे माहौल और व्यवहार से उनमें असुरक्षा की भावना बचपन से ही घर कर जाती है। यह मन के तल पर बैठ जाती है, जिससे निकलना आगे चलकर मुश्किल हो जाता है। ऐसे में किसी चीज या व्यक्तित्व से उनका लगाव आकर्षण होना और उनको पाने की होड़ लगाना हैरान करने वाली बात नहीं है। बल्कि इसके पीछे अच्छी खासी वजहें काम कर रही होती हैं।

पुरुष भी जाने-अनजाने तौर पर इसका शिकार होते हैं। होता यह है कि पुरुष बच्चे को बचपन से ऐसी परवरिश देने की कोशिश होती है जहाँ वह निश्चित उम्र आने पर एक मुखिया के रूप में उभरे। इसलिए उसके व्यक्तित्व में शक्ति का संचालन करने की कोशिश बचपन से ही शुरू कर दी जाती है, जैसे उसे मर्द होने के मायने समझाना। उसके कपड़े से लेकर उसकी भाषा तक में एक पुरुषत्व भर दिए जाने की जिद्द दिखाई देना हमारे लिए बेहद सामान्य बात होती है। उसके रोने पर कहना कि क्या लड़कियों जैसे आसूं बहा रहे हो? कई बार बहुत से पुरुष बच्चों को परिवार में किसी चीज को हासिल करने में मेहनत की भी जरूरत नहीं होती। उदाहरण के लिए रोज का भोजन। इसके लिए वह कोई शारीरिक परिश्रम नहीं करता। इसके ठीक दूसरी तरफ एक नौजवान होती लड़की रसोई में छौंक लगाना सीख जाती है। वे सिलाई से लेकर सफाई तक करती है और मेहनत से खाती है। लेकिन पुरुष बच्चे में यह नहीं दीखता। बड़े होकर किसी भी चीज को पाना वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। हासिल न होने पर उनमें भी ईर्ष्या और द्वेष जैसे तत्व स्वतः आ जाते हैं। इसलिए ईर्ष्या का तत्व दोनों ही लिंगों में समान रूप से मौजूद है।

एक अंग्रेजी फिल्म जो सन् 2003 में आई थी, बड़ी ही खास लगती है। यह फिल्म औरतों को नए नजरिए में पेश करती है। फिल्म का नाम 'मोनालिजा स्माइल' है। फिल्म की कहानी सन् 1953 में वेल्स्ले कॉलेज की एक टीचर जो 'बियोंड द इमेज' देखने की कोशिश करने वाली है और उसकी कुछ स्टूडेंट्स जो कि 'ओनली इन द इमेज' देखने के बीच घूमती है। टीचर 'हिस्ट्री ऑफ आर्ट' पढ़ाने आती है। वह चाहती है कि उसकी स्टूडेंट्स बनी बनाई छवियों को तोड़कर उसके आगे देखें। वह खुद दुनिया को नई आँखों और अपने नए नजरिये से देखती है। वह उन लड़कियों के अंदर इस बात का अहसास कराने की कोशिश करती है कि जो भी आपके सामने रखा गया है उसे उस रूप में न देखकर उसके परे भी देखने की कोशिश कीजिए। अपना खुद का नजरिया पैदा कीजिये। जो परम्पराएं आपको दी गई हैं वास्तव में वे नजरों को एक ही दिशा में सेट कर रही हैं। औरतों को भी चुनने का या रिजेक्ट करने का हक अपने अंदर पैदा करना आना चाहिए ताकि आने वाले समय में एक नए लिबास में कुछ छवियाँ दिखें। इस फिल्म से बहुत कुछ नहीं तो कुछ तो जरूर समझा जा सकता है। इसलिए वे दोस्त या महिलाएं जो यह मानती हैं कि ''औरतें एक दूसरे की दुश्मन होती हैं या फिर वे एक दूसरे को देखकर जलती हैं'' जैसे मानसिक शोषण के तानेबाने से बाहर निकलें।

अतः जब लड़कियां या औरतें सजती हैं तब उनका मकसद अपने को बेहतर तरीके से पेश करने, खुशनुमा होने, परिधान में आराम महसूस करने आदि से होता है। यदि किसी ने मनपसंद कपड़े पहने हैं तो इसका अर्थ सिर्फ इतने तक ही माना जाए न कि किसी दूसरी लड़की को जलाने के लिए पहनने से समझा जाए। यह गलत धारणाएं हैं जो फैलाई गई। गजब तो यह कि इस तरह की मानसिकता का इतिहास भी पुराना है। अगर हम ऐसी बात सोचते हैं या करते हैं तो वास्तव में इस बीमार सोच की परवरिश कर रहे हैं। रही बात जलन की तो वो जितनी मात्रा में पुरुषों में है उतनी ही मात्रा में औरतों में भी है। कहीं से भी अनुपात में कम अधिक का चक्कर नहीं होता। प्रकृति ने सभी को बराबर मात्रा में सभी तत्व दिये हैं। इससे इंकार नहीं किया जा सकता। लेकिन तराजू लेकर बांटने की कला को समाजों ने चालाकी से अपनाया और बढ़ाया भी।

इस वर्णन के साथ यह समझने पर भी जोर देना जरूरी है कि औरतों से जुड़े हंसी-मजाक और जो जोक सुनाए जाते हैं, उन्हें सुनने के समय थोड़ी गंभीरता अपनानी चाहिए। थोड़ा सतर्क हो जाना चाहिए। किसी के व्यक्तित्व का मजाक उड़ाना, मजाक की श्रेणी में नहीं आता, बल्कि यह अपमान की श्रेणी है। उनके पीछे के कारण को समझना बेहतर होगा। असल में झगड़ा बंदूकों से कहीं आगे दिमागी तहखानों में चल रहा है। रसोईघर की अवैतनिक कर्मचारी को हर जगह से घेरा गया है। इसलिए इन संदर्भों को समझना बेहद जरूरी है। अपनी सोच को परिष्कृत करना एक बेहतर विकल्प है। बाकी आप भी सोचिए। जानिए किन बातों के सिरे कहाँ तक पहुंचे हुए हैं? जब कुछ अटपटा लगे तो वहीं उन मजाकों पर बात कीजिए और कहिये- अल्लाह, मेरी तौबा!